डाक संस्करण

www.facebook.com\rashtriyasahara https://twitter.com/SaharaRashtriya www..rashtriyasahara.com

'शाबाश मिठू' 4 फरवरी को होगी रिलीज
पेज-16

राष्ट्रीय सहारा
राष्ट्रीयता ■ कर्तव्य ■ समर्पण

■ कानपुर ■ नई दिल्ली ■ लखनऊ ■ गोरखपुर
■ पटना ■ देहरादून ■ वाराणसी से प्रकाशित

कानपुर
शनिवार ● 4 दिसम्बर ● 2021
•••••••+ पृष्ठ 16+4 (हस्ताक्षेप), मूल्य ₹ 3.00

सराफा दिल्ली सोना (प्रति 10 ग्राम) ₹ 46,581 | चांदी (प्रति किलो) ₹ 59,878 | शेयर सेंसेक्स 57,696 -765 | निफ्टी 17,197 -205 | विनिमय दर ₹/$ 75.16 -0.14 | मौसम (कानपुर) तापमान अधिकतम 25.5° न्यूनतम 17.0°

युवाओं के बेहतर भविष्य के लिये कृषि शिक्षा जरूरी : प्रो. एनपी मल्कानिया

झांसी (एसएनबी)। केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान में प्रो. एन. पी. मल्कानिया, अधिष्ठाता (शैक्षणिक) विश्वविद्यालय के मुख्य आतिथ्य में "कृषि शिक्षा दिवस" का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. ए. अरूणाचलम ने की।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में प्रो. मल्कानिया ने कहा कि कृषि शिक्षा दिवस का आयोजन युवाओं के बेहतर भविष्य के लिये जरूरी है। युवाओं को कृषि से जोड़ने और भारत में कृषि शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिये 3 दिसम्बर का दिन कृषि शिक्षा दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया, इसदिन भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का जन्म दिवस है। इसका मुख्य उद्देश्य ज्यादा से ज्यादा युवाओं को कृषि की शिक्षा उपलब्ध करवाना और देश को कृषि क्षेत्र में समृद्ध बनाना है।

केंद्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान में कृषि शिक्षा दिवस का आयोजन

देश में कृषि शिक्षा की प्रगति से युवा निरन्तर कृषि शिक्षा प्राप्त करके इसे रोजगार का माध्यम बना रहे है। विभिन्न फल, फूल, सब्जी की खेती, मशरूम, मछली पालन, डेयरी, मधुमक्खी पालन, सुअर पालन एवं औषधीय फसलों की खेती से जुड़े कई ऐसे व्यवसाय है, जो युवाओं को कृषि शिक्षा के प्रति आकर्षित करते है। कृषि शिक्षा को बढ़ावा देने में भारतीय कृषि अनुसांधान परिषद एक अहम् भूमिका निभा रहा है।

परिषद का उद्देश्य निरन्तर नये केन्द्रों की स्थापना करना, पिछड़े राज्यों में युवाओं को कृषि शिक्षा के लिये बढ़ावा देना, कृषि पाठ्यक्रम को आधुनिक रोजगारपरक और आसान बनाकर उसकी गुणवत्ता को सुनिश्चित करना, कृषि शिक्षा प्रणाली में बदलाव व सुधार लाना तथा छात्रों की रूचि को खेती की दिशा में प्रेरित करने के लिये प्रयास किया जाना है, ताकि वे देश की कृषि विकास में अपना योगदान कर सकें।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में संस्थान के निदेशक डॉ. अरूणाचलम ने कहा कि वर्तमान सरकार किसानों की आय को दोगुनी करने के लक्ष्य को पूरा करने के लिये अनेक प्रयास कर रही है। इस दिशा में कई सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठन निरन्तर कार्य कर रहे है। इसी कड़ी में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने कृषि शिक्षा के लिये कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाये है जैसे- चार वर्षीय स्नातक कृषि शिक्षा को प्रोफेशनल डिग्री का दर्जा, छात्रों के कौशल विकास हेतु "स्टूडेण्ट रेडी स्कीम" की शुरूआत, स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों हेतु छात्रवृत्ति जिनका प्रवेश भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के माध्यम से होता है आदि।

उन्होंने बताया कि आधुनिक कृषि शिक्षा हेतु देश में 77 कृषि विश्व विद्यालय, जिसमें 66 राज्य स्तरीय, 3 केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, 4 डीम्ड विश्वविद्यालय तथा 4 केन्द्रीय विश्वविद्यालय है इसके अतिरिक्त कुछ परम्परागत राज्य विश्वविद्यालय में कृषि शिक्षण की स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध है। वर्तमान कृषि विज्ञान विषय छात्रों में अत्यन्त लोकप्रिय विषय है। कार्यक्रम में रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हिसार एवं आई.टी.एम.यू., ग्वालियर के स्नातक एवं स्नातकोत्तर के छात्रों के अतिरिक्त संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, शोध अध्येता तथा शोध छात्रों ने भागीदारी की।

कृषि शिक्षा दिवस के उपलक्ष्य में संस्थान में आज से तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी प्रारम्भ किया गया, जिसका विषय "डीएनए आईसोलेशन एण्ड पी.सी.आर. टैक्निकस् इन प्लांट बायोटैक्नोलोजी" है। इस प्रशिक्षण में अलग-अलग विश्वविद्यालयों जैसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हरियाणा, वै.औ.अ.प.-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, सरदार बल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ, आई.टी.एम.यू., ग्वालियर, रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी एवं केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झाँसी से 23 छात्र/छात्रायें भाग ले रहे है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 3-5 दिसम्बर, 2021 तक चलेगा तथा इसके समन्वयक डॉ. राजराजन एवं डॉ. हृदयेश अनुरागी है। कृषि शिक्षा दिवस कार्यक्रम का संचालन डॉ. नरेश कुमार एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. इन्दर देव ने किया।